॥ श्रीवरदराजाचार्यविरचिता ॥

लघुसिद्धान्तकौमुदी

अव्ययानि

लघुकौमुदी के ३५ संस्करणों पर आधारित रंगीन संस्करण

इस विषय के शोधपूर्ण सरलव्याख्यान पद्धति पर आधारित वीडियो हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं।



संस्कृतसारः

छिद्यन्ते सर्वसंशयाः

परामर्शकौ

प्रो. ब्रजभूषणओझा

प्रो. नीलाभतिवारी

इन स्लाइड्स के माध्यम से पढ़ने के लिए अथवा इनकी व्याख्या देखने के लिए हमारे चैनल का अनुसरण करें।



YouTube संस्कृतसारः @sanskrit sar

प्रस्तोता

डॉ. श्रीओमशर्मा (व्याकरणविद्याशाखा)

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः,

श्रीरघुनाथकीर्तिपरिसरः देवप्रयागः (उत्तराखण्डः)

निवेदनम्

यह पठन-पाठनसामग्री 'संस्कृतव्याकरण' में शीघ्र प्रवेशेच्छुक-छात्राध्यापकों के हेतु 'संस्कृतसारः' इस समाजसेवी संस्था द्वारा संस्कृतभाषा की सेवार्थ प्रस्तुत की जा रही है। अतः आपसे निवेदन है कि इन 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' स्लाइड्स् व वीडियोज् का अपने पठन-पाठन में पर्याप्त उपयोग कर संस्कृत की सेवा में हमारा सहयोग करें।

सूचना— यह अध्ययन सामग्री पूर्णतः निश्शुल्क है तथा इस पर कोई कॉपीराइट भी नहीं हैं।

दिनाङ्कः-

04.06.2021

अस्माकं सम्पर्कसूत्राणि—

e-mail अणुवाक्— samskritsaarah@gmail.com

ह्वाट्सैप्— ८८९९१८७९२९ (भवतां परामर्शानां स्वागतम्)

YOUTUBE — संस्कृतसारः @sanskrit sar

FACEBOOK— @sanskrit_shiksha संस्कृतशिक्षा

निवेदकः-

संस्कृतशिक्षा-परिवारः

(सम्पर्कसूत्रम्-9424692199)

संस्कृतसारः
छिद्यन्ते सर्वसंशयाः

लघुसिद्धान्तकौमुद्याम् (अव्ययानि)

अव्ययानां भेदाः

१.स्वरादीनि

२.निपाताः

२.१.चादयः
२.२.उपसर्गाः
२.३.कर्मप्रवचनीयाः
२.४गतयः

३.तद्धितान्तानि

(परिगणितानि असर्वविभक्तिकानि)

४.कृदन्तानि

(मान्त-एजन्त-क्त्वान्त-तोसुँन्नन्त-कसुँनन्तानि)

५.अव्ययीभाव-समासान्तानि



संस्कृतसारः
छिद्यन्ते सर्वसंशयाः

स्वरादिगणे पठितानि अव्ययानि

लघुसिद्धान्तकौमुद्याम् (अव्ययानि)

❖ सूत्रम्— स्वरादिनिपातमव्ययम्॥ (१,१.३७)

❖ सूत्रार्थः— स्वरादयो निपाताश्चाव्ययसंज्ञाः स्युः।

1. स्वर्= स्वर्गे परलोके च। पुण्यकर्माणः स्वर्गच्छन्ति।
2. अन्तर्= मध्ये। निवसन्-अन्तर्दारुणि लङ्घ्यो वह्निर्न तु ज्वलितः।
3. प्रातर्= प्रत्यूषे। प्रातर्द्यूतप्रसङ्गेन मध्याह्ने स्त्रीप्रसङ्गतः।
4. पुनर्= भूयोऽर्थे विशेषे च। पुनरपि जननं पुनरपि मरणम्।
5. सनुतर्= अन्तर्धाने। सनुतश्चौरो गच्छति। वैदिकम्।
6. उच्चैस्= महति। उच्चैर्विहस्य।
7. नीचैस्= अल्पे। नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।
8. शनैस्= क्रियामान्द्ये। शनैः पन्थाः शनैः कन्था।
9. ऋधक्= सत्ये। किं स ऋधक् कृणवत्। वैदिकम्।
10. ऋते= विनार्थे। ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
11. युगपत्= एककाले। तेजो द्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्याम्।
12. आरात्= दूरसमीपयोः। आराद् दुष्टात् सदा वसेत्।
13. पृथक्=भिन्ने। भार्या दण्डं पृथक् शय्या।
14. ह्यस्= गतदिने। ह्योऽस्माकं परीक्षाऽभूत्।
15. श्वस्= अनागतेदिवसे। श्वः कार्यमद्य कुर्वीत।
16. दिवा= दिवसे। दिवा शयानाज्जागरणाच्च रात्रौ।
17. रात्रौ= निशि। दिवा निरीक्ष्य वक्तव्यं रात्रौ नैव च नैव च।
18. सायम्= निशामुखे। सायं प्रातर्मनुष्याणामशनं श्रुतिबोधितम्।
19. चिरम्= बहुकाले। न चिरं पर्वते वसेत्।
20. मनाक्= अल्पे। जले तैलं खले गुह्यं पात्रं दानं मनागपि।
21. ईषत्= अल्पे। ईषदीषच्चुम्बितानि भ्रमरैः।
22. जोषम्= सुखं मौने च। किमिति जोषम् आस्यते?
23. तूष्णीम्= मौने। न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह।
24. बहिस्= बाह्ये। अन्तर्विषमया ह्येते बहिश्चैव मनोहराः।
25. अवस्= बाह्ये। मित्रस्य चर्षणि धृतोऽवो देवस्य। वैदिकम्।
26. समया= समीपे मध्ये वा। गुणदोषाभिव्यक्तिर्वचसां संजायते सतः समया।
27. निकषा= सपीपे। निकषा यमुनां राजंस्ततो युद्धमवर्त्तत।
28. स्वयम्= आत्मने। इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः।

संस्कृतसारः
छिद्यन्ते सर्वसंशयाः

स्वरादिगणे पठितानि अव्ययानि

लघुसिद्धान्तकौमुद्याम् (अव्ययानि)

29. वृथा= व्यर्थे। वृथा वृष्टिः समुद्रेषु वृथा तृप्तस्य भोजनम्।
30. नक्तम्= रात्रौ। दिवा पश्यति नोलूकः काको नक्तं न पश्यति।
~~31. न =निषेधे। न गणस्याग्रतो गच्छेत्।~~
~~32. नञ्= निषेधे। अनग्नाविव शुष्कैधो न तज्ज्वलति कर्हिचित्।~~
33. हेतौ= निमित्ते। सप्तमीविभक्तिप्रतिरूपकमव्ययमिदम्।
34. इद्धा= प्रकटे। अल्पप्रयोगः।
35. अद्धा= स्फुटावधारणयोः। को अद्धा वेद। वैदिकम्।
36. सामि= अर्धे निन्दायाञ्च। सामिभुक्तविषयाः समागमाः।

- ❖ गणसूत्रम्— 37. वत् = तुल्ये।
- ❖ अर्थः— (वत्प्रत्ययान्तः स्वरादिगणसन्निविष्टो वेदितव्यः।)
- ❖ उदाहरणम्— ब्राह्मणवत्= क्षत्रियवत्॥
- ❖ ('तद्धितश्चासर्वविभक्तिः' इत्यनेन सिद्धत्वादस्य गणसूत्रस्य स्वरादिषु पाठश्चिन्त्यः।)

38. सना= नित्ये। एष धर्मः सनातनः। वैदिकम्।
39. सनत्= नित्ये । सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः।
40. सनात्= नित्ये। सनात् सनातनतमः। वैदिकम्।
41. उपधा= भेदे। अस्याव्ययस्य प्रयोगः कुत्रापि न दृष्टः।
42. तिरस्= अन्तर्धौ तिर्यगर्थे परिभवे च। तिरः कृत्वा शाखां निर्गतः।
43. अन्तरा= मध्ये विनार्थे च। त्रिशङ्कुरिव अन्तरा तिष्ठ।
44. अन्तरेण= मध्ये विनार्थे च। प्रमाणमन्तरेण नार्थप्रतिपत्तिः।
45. ज्योक्= कालाधिक्ये प्रश्ने शीघ्रे औज्वल्ये सम्प्रत्यर्थे च। वैदिकम्।
46. कम्= वारिमूर्धनिन्दासुखेषु। कमले कमला शेते।
47. शम्= सुखे कल्याणे च। श्रीशङ्करः पातु माम्।
48. सहसा= आकस्मिके। सहसा विदधीत न क्रियाम्।
49. विना= वर्जने। विना गोरसं को रसो भोजनस्य।
50. नाना= अनेकविनार्थयोः। नानाफलैः फलति कल्पलतेव भूमिः।
51. स्वस्ति=मङ्गले। स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्।
52. स्वधा= पितृदाने। पितृभ्यः स्वधा।

संस्कृतसारः
छिद्यन्ते सर्वसंशयाः

स्वरादिगणे पठितानि अव्ययानि

लघुसिद्धान्तकौमुद्याम् (अव्ययानि)

53. अलम्= भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणनिषेधेषु। अलं महीपाल तव श्रमेण।
54. वषट्= देवहविर्दाने। वषडस्तु तुभ्यम्।
55. श्रौषट्= देवहविर्दाने। अस्तु श्रौषट् पुरोऽग्निम्।
56. वौषट्= देवहविर्दाने। सोमस्याग्ने व्रीहि वौषट्।
57. अन्यत्= अन्यार्थे। देवदत्त आयातो अन्यच्च यज्ञदत्तः।
58. अस्ति= विद्यमाने। अस्ति नास्ति न जानन्ति।
59. उपांशु= अप्रकटोच्चारणरहस्ययोः। परिचेतुमुपांशु धारणाम्।
60. क्षमा= क्षान्तौ। क्षमा करोतु भवान्। स्वल्पप्रयोगः।
61. विहायसा= आकाशार्थे। विहायसा पश्य विहङ्गराजम्।
62. दोषा= रात्रौ। दोषापि नूनमहिमांशुरसौ किलेति(माघे)।
63. मृषा= असत्ये। मृषा वदति लोकोऽयम्।
64. मिथ्या= असत्ये। ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या।
65. मुधा= व्यर्थे। मुधा बुधा भ्रमन्त्यत्र प्रत्यक्षेऽपि क्रियापदे।
66. पुरा= व्यतीते काले। पुरा कवीनां गणना प्रसङ्गे।
67. मिथो= रहः सहार्थयोः। मन्त्रयन्ते मिथो। चादिषु पठनीयम्।
68. मिथस्= रहः सहार्थयोः। एष तैर्मिथः समयः कृतः।
69. प्रायस्= बहुधा। प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितः तत्रैव यात्यापदः।
70. मुहुस्= पुनरर्थे। ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः।
71. प्रवाहुकम् (बा), प्रवाहिका= समानकाले ऊर्ध्वार्थे च। वैदिकम्।
72. आर्यहलम्= बलपूर्वककरणे। आर्यहलं गृह्णाति। (स्वल्पप्रयोगः)
73. अभीक्ष्णम्= पौनः पुन्ये। क्षते प्रहारा निपतन्त्यभीक्ष्णम्।
74. साकम्= सहार्थे। यान्ती गुरुजनैः साकं स्मयमानाननाम्बुजा।
75. सार्धम्= सहार्थे। नाश्नीयाद् भार्यया सार्धं नैनमीक्षेत चाश्नतीम्।
76. नमस्= नमने। नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय। नपुंसके सान्तोऽपीदं- नमांसि।
77. हिरुक्= वर्जनसमीपादिषु। पर्वतस्य हिरुङ् नदी।
78. धिक्= निन्दाभर्त्सनयोः। धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च।
79. अथ= मङ्गलानन्तर्यादिषु। अथ प्रजानामधिपः प्रभाते।
80. अम्= शैघ्र्येऽल्पे च। अन्वेषणीयम्। दीक्षितमतेऽयं प्रत्ययः।
81. आम्= अङ्गीकारे। आम् ज्ञातम्।
82. प्रताम्= ग्लानौ। अन्वेषणीयं प्रयोगक्षेत्रम्।

स्वरादिगणे, चादिगणे च पठितानि अव्ययानि

83. प्रशान्/म्= समानार्थे। प्रयोगो मृग्यः। (नागेशमते इदं मकारान्तम्।)
84. प्रतान्= विस्तारे। प्रयोगो मृग्यः। (कतिपयपुस्तकेष्विदं नास्ति।)
85. मा= निषेधाशङ्क्योः। मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि। (नागेशमते इदं नास्ति।)
86. माङ् = निषेधाशङ्क्योः। मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः।

आकृतिगणोऽयम्॥ (अन्येऽप्येवं जातीयकाः स्वरादिगणे ज्ञेयाः।)

२-तेनान्येऽपि ज्ञेयाः। तथा हि—कामं स्वाच्छन्द्ये। प्रकाममित्यतिशये। भूय इति पुनरर्थे। साम्प्रतमिति न्याय्ये। परमिति किन्त्वर्थे। साक्षात् प्रत्यक्षे। साचीति तिर्यगर्थे। सत्यमित्यर्धाङ्गीकारे। मङ्क्षु, आशु एतौ शैघ्र्ये। संवत् वर्षे। अवश्यं निश्चये। उषेति रात्रौ। ओमित्यङ्गीकारे ब्रह्मणि च। भूरिति पृथिव्याम्। भुवरित्यन्तरिक्षे। झटिति, झगिति, तरसा—एते शैघ्र्ये। सुष्ठु प्रशंसायाम्। दुष्ठु निकृष्टे। सु पूजायाम्। कु कुत्सितेषदर्थयोः। अञ्जसेति तत्त्वशीघ्रार्थयोः। मिथु इति द्वावित्यर्थे। अस्तमिति विनाशे। स्थाने इति युक्ते। वरमिति ईषदुत्कर्षे। सुदि शुक्लपक्षे। सुठि कृष्णपक्षे इत्यादि॥

(चादिगणः/ निपाताः)

1. च= समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोगसमाहारेषु। विद्यामर्थञ्च चिन्तयेत्।
2. वा= विकल्पेवार्थसमुच्चयेषु। निद्रया कलहेन वा।
3. ह= प्रसिद्धौ। तस्य ह शतं जाया बभूवुः।
4. अह= खेदे पूजादिषु च। अह माणवको भुङ्क्ते।
5. एव= अवधारणेऽनवक्लृप्तौ च। सत्यमेव जयते...।
6. एवम्= उक्तपरामर्शे। एवमुक्त्वाऽर्जुनः संख्ये....।
7. नूनम्= निश्चये तर्के च। तन्नूनं सा वानरी भविष्यति।
8. शश्वत्= पौनःपुन्ये नित्ये सहार्थे च। शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
9. युगपत्(द्)= एककाले। तेजो द्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्याम्।
10. भूयस्= पुनरर्थे आधिक्ये च। भवन्ति भूयः पुरुषः सुरत्वात्।
11. कूपत्= प्रश्ने प्रशंसायाञ्च। प्रयोगो मृग्यः।
12. सूपत्= प्रश्ने प्रशंसायाञ्च। प्रयोगो मृग्यः। (कतिपयपुस्तकेष्विदं नास्ति।)
13. कुवित्= आधिक्यार्थे प्रशंसायाञ्च। प्रयोगो मृग्यः।
14. नेत्= शङ्कायाम्। वैदिकम्।

चादिगणे पठितानि अव्ययानि

लघुसिद्धान्तकौमुद्याम् (अव्ययानि)

15. चेत्= यद्यर्थे। लोभश्चेद् अगुणेन किम्।
16. चण्= यद्यर्थे। अयं च मरिष्यति।
17. कच्चित्= इष्टप्रश्ने। कच्चित् स्वादुकृतं भोज्यमेको नाश्नासि राघव।
18. यत्र=यस्मिन् स्थाने,अनवक्लृप्त्यमर्षगर्हाश्चर्येषु। यत्र विद्वज्जनो नास्ति।
19. न+ह= निश्चित्-निषेधे। नह भोक्ष्यसे।
20. हन्त= हर्षे विषादेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भे च। हन्त ते कथयिष्यामि..।
21. माकिः/ माकिर्= वर्जनार्थे। माकिर्नो दुरिताय धायी। वैदिकम्।
22. माकिम्/ माकीम्= वर्जनार्थे।केषाञ्चिन्मते माकिम् अपपाठः। वैदिकम्।
23. नकिः/र्= वर्जनार्थे। नकिस्तं घ्नन्त्यन्तितो न दूरात्। वैदिकम्।
24. नकिम्/नकीम्= वर्जनार्थे। नकीम् इन्द्रो निकर्तवे। नकिमपपाठः। ,,
25. माङ्= निषेधे। मा नो धर्मो हतो वधीत्। नागेशमते अत्रैव पाठो युक्तः।
26. नञ्= निषेधे। अश्वं नैव गजं नैव। नागेशमते अत्रैव पाठो युक्तः।
27. यावत्= साकल्यावधिमानावधारणेषु। यावत्स्वस्थमिदं कलेवरगृहम्। त्रिलिङ्गे..
28. तावत्=साकल्यावधिमानावधारणेषु ।तावद् द्वितीयं समुपस्थितं मे। त्रिलिङ्गेष्वपि
29. त्वै = विशेषवितर्कयोः। वर्णानां विप्रास्त्वै प्रकृष्यन्ते ।वैदिकम्।
30. द्वै/ न्वै=वितर्के। उदाहरणं मृग्यम्।
31. रै= दानेऽनादरे च। रै करोति (दानं ददाति)। अल्पप्रयोगः।
32. श्रौषट्= देवहविर्दाने। अस्तु श्रौषट् पुरोऽग्निम्।
33. वौषट्= देवहविर्दाने। सोमस्याग्ने व्रीहि वौषट्।
34. स्वाहा= देवहविर्दाने। त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
35. स्वधा= पितृदाने। पितृभ्यः स्वधा।
36. वषट्= देवहविर्दाने। वषडस्तु तुभ्यम्।

पुनः पाठस्तु आद्युदात्तार्थः

37. तुम्= निरादरे। गुरुं हुंकृत्य तुंकृत्य विप्रं निर्जित्य वादतः।
38. तथा+हि= निदर्शने। तथाहि ते शीलमुदारदर्शने।
39. खलु= निषेधवाक्यालङ्कारनिश्चयेषु। न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम।
40. किल= वार्तायमलीके च। इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः।
41. अथो=मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्यादिषु ।अथो वयस्यां परिपार्श्ववर्तिनीम्।
42. अथ= मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्यादिषु ।अथातो ब्रह्मजिज्ञासा।
43. सुष्ठु= प्रशंसायाम् ।सुष्ठु शोभसे आर्यपुत्र एतेन विनयमाहात्म्येन।

संस्कृतसारः
छिद्यन्ते सर्वसंशयाः

चादिगणे पठितानि अव्ययानि

44. स्म= अतीते पादपूरणे च। भासुरको नाम सिंहः प्रतिवसति स्म।
45. आदह= उपक्रमहिंसाकुत्सनेषु। अन्वेषणीयं प्रयोगक्षेत्रम् ।

गणसूत्रम्— (उपसर्गविभक्तिस्वरप्रतिरूपकाश्च)

अर्थः— उपसर्गप्रतिरूपका विभक्त्यन्तप्रतिरूपका अच्प्रतिरूपकाश्च चादिगणे पाठ्याः। (प्रतिरूपकत्वम्= सादृश्यम्)

उपसर्गप्रतिरूपकम्—

46. अव+दत्तम्= दानं दत्तम्। अवदत्तं विदत्तं च प्रदतञ्चादिकर्मणि।

विभक्त्यन्तप्रतिरूपकम्—

47. अहं+युः= अहङ्कारे। अहंयुनाऽथ क्षितिपः शुभंयुः।
48. अस्ति/मि+क्षीरा= विद्यमानक्षीरवती। अस्ति पूर्वमहं व्योमचारी।

स्वरप्रतिरूपकम्—

49. अ= संबोधनाक्षेपे च। अ अनन्त।
50. आ= वाक्यस्मरणयोः। आ एवं नु मन्यसे।
51. इ= संबोधनजुगुप्साविस्मयेषु। इ इन्द्रः।
52. ई= संबोधने। ई ईश।
53. उ= संबोधने । उ उत्तिष्ठ।
54. ऊ= संबोधने । ऊ ऊषरे बीजं वपति।
55. ए= संबोधने । ए इतो भव।
56. ऐ= संबोधने । ऐ वाचं देहि।
57. ओ= संबोधने । ओ श्रावय।
58. औ= संबोधने । औ महात्मन्।
59. पशु= सम्यगर्थे। लोधं नयन्ति पशुमन्यमानाः।
60. शुकम्/शकम्= शैघ्ये। शुकं गच्छति।
61. यथा+कथा+च=अनादरे।यथाकथाच दीयते। अल्पप्रयोगः।
62. पाट्= संबोधने । प्रयोगो मृग्यः।
63. प्याट्= संबोधने । प्रयोगो मृग्यः ।
64. अङ्ग= संबोधने । अङ्गकच्चित्कुशली तातः।
65. है= संबोधने । है राम पाहि माम्।

चादिगणे पठितानि अव्ययानि

66.हे= संबोधने । हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।

67.भोस्/ भो= संबोधने । भो भोः पण्डिताः श्रूयन्ताम्।

68.अये= संबोधने । अये गौरीनाथ त्रिपुरहर शम्भो त्रिनयन।

69.द्य= हिंसाप्रातिलोम्यपादपूरणेषु। प्रयोगो मृग्यः ।

70.विषु= साम्यर्थे। विषुवद् वृत्तम्।

71.एकपदे= अकस्मादर्थे। कथं एकपदे निरागसम्।

72.युत्/पुत्= कुत्सायाम्। प्रयोगो मृग्यः ।

73.आतः=इतोऽप्यर्थे। आतश्चसूत्रत एव।

॥ चादिरप्याकृतिगणः॥

संस्कृतसारः
छिद्यन्ते सर्वसंशयाः

असर्वविभक्तिकानि तद्धितान्ताव्ययानि

लघुसिद्धान्तकौमुद्याम् (अव्ययानि)

❖ सूत्रम्— तद्धितश्चासर्वविभक्तिः॥ (१,१.३७)

❖ सूत्रार्थः— यस्मात् (वचनत्रयात्मिका) सर्वाविभक्तिर्नोत्पद्यते स तद्धितान्तोऽव्ययं स्यात्। वार्तिकम्— परिगणनं कर्तव्यम्—



अयं कोष्ठान्तर्गतः पाठः कुत्रचित् संस्करणेषु न दृश्यते।

i. तसिँलादयः प्राक्-पाशपः।
ii. शस्प्रभृतयः प्राक्-समासान्तेभ्यः।
iii. अम्।
iv. आम्।
v. कृत्वोऽर्थाः।
vi. तसिँवती।
vii. ना-नाञौ।

एतदन्तमप्यव्ययम्॥

i. तसिलादयः प्राक्-पाशपः।

अर्थः— 'पञ्चम्यास्तसिँल्'(५.३.७) इति सूत्रादारभ्य 'याप्ये पाशप्' इति सूत्रात्प्राक् 'एधाच्च'(५.३.४६) सूत्रपर्यन्तविहिताः ये प्रत्ययाः सन्ति। (एतदन्तमप्यव्ययम्) तदन्तशब्दानाम् अव्ययसञ्ज्ञा भवति।

1. तसिँल्— इतः, ततः, अतः, कुतः, यतः, सर्वतः, अन्यतः, परितः, अभितः, उभयतः। इत्यादि।
2. त्रल् — सर्वत्र, कुत्र, अन्यत्र, अत्र, यत्र, एकत्र, अमुत्र, बहुत्र, पूर्वत्र, उत्तरत्र, उभयत्र। इत्यादि।
3. ह — इह, कुह।
4. अत् — क्व
5. दा — सर्वदा, सदा, एकदा, अन्यदा, कदा, यदा, तदा।
6. र्हिल् — एतर्हि, कर्हि, यर्हि, तर्हि।
7. धुना — अधुना
8. दानीम् — इदानीम्, तदानीम्।

असर्वविभक्तिकानि तद्धितान्ताव्ययानि

9. सद्यसादिनिपातनम् — सद्यः, परुत्, परारि, ऐषमः, परेद्यवि, अद्य, पूर्वेद्युः, अन्येद्युः, अन्यतरेद्युः, इतरेद्युः, अपरेद्युः, अधरेद्युः, उभयेद्युः, उत्तरेद्युः, उभयद्युः।
10. थाल् — यथा, तथा, सर्वथा, अन्यथा, उभयथा।
11. थमुँ — इत्थम्, कथम्।
12. था — कथा (वैदिकम्)।
13. अस्तातिँ — पुरस्तात्, परस्तात्, अधस्तात्।
14. अतसुँच् — दक्षिणतः, उत्तरतः, परतः, अवरतः।
15. अस्तातेर्लुक् — प्राक्, प्रत्यक्। इत्यादि।
16. रिल्,रिष्टात् — उपरि, उपरिष्टात्।
17. आतिँ — पश्चात्। उत्तरात्, अधरात्, दक्षिणात्।
18. अ,आ — पश्च, पश्चा (वेदे)।
19. एनप् — उत्तरेण, अधरेण, दक्षिणेन।
20. आच् — दक्षिणा= दक्षिणदिशि।
21. आहि — दक्षिणाहि= दक्षिणदिशि।
22. असिँ — पुरः, अधः, अवः= न्यूनम् (स्वरादिषु पठितम्)।
23. धा — एकधा, द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पञ्चधा, षड्धा षोढा, सप्तधा, अष्टधा, नवधा, बहुधा। इत्यादि।
24. ध्यमुँञ् — ऐकध्यम्= एकवारम्।
25. धमुँञ् — द्वैधम्, त्रैधम्।
26. एधाच् — द्वेधा, त्रेधा।

असर्वविभक्तिकानि तद्धितान्ताव्ययानि

ii. शस्प्रभृतयः प्राक्-समासान्तेभ्यः।

अर्थः— 'बह्वल्पार्थाच्छस् कारकादन्यतरस्याम्'(५.४.४२) इति सूत्रादारभ्य समासान्तप्रत्ययेभ्यः प्राक् 'अव्यक्तानुकरणाद् द्व्यजवराधादनितौ डाच्'(५.४.५७) सूत्रपर्यन्तविहिताः ये प्रत्ययाः सन्ति। (एतदन्तमप्यव्ययम्) तदन्तशब्दानाम् अव्ययसञ्ज्ञा भवति।

1. शस्— (बहुशः= बहुतों को/से/के लिए इत्यादि), अल्पशः, भूरिशः, स्तोकशः, एकशः, द्विशः, त्रिशः, शतशः, सहस्रशः (संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम्) अनेकशः। इत्यादि
2. तसिँ — वासुदेवतः, अर्जुनतः। आदितः, मध्यतः, वृत्ततः, वीर्यतः, ज्ञानतः, नामतः। चोरतः।
3. च्विँ — शुक्ली करोति, शुक्ली भवति, शुक्ली स्यात्। इत्यादि।
4. सातिँ — उदकसाद् भवति (लवणम्), अग्निसाद् भवति (शस्त्रम्)।
5. त्रा— ब्राह्मणत्रा करोति= ब्राह्मणाधीनं देयं करोति।
6. डाच् — पटपटा करोति, दमदमा करोति। इत्यादि।

iii. अम् — प्रतरम् न आयुः। वैदिकम्।

iv. आम् — किन्तराम्, किन्तमाम्, पचतितराम्, पचतितमाम्।....

कृत्वोऽर्थाः — अर्थः— 1.सङ्ख्यायाः क्रियाभ्यवृत्तिगणने कृत्वसुँच्, 2.द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्, 3. एकस्य सकृच्च, 4.विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले इति सूत्रैः विहिताः प्रत्ययाः कृत्वोऽर्थाः सन्ति। (एतदन्तमप्यव्ययम्) तदन्तशब्दानाम् अव्ययसञ्ज्ञा भवति। यथा—

कृत्वसुँच्— पञ्चकृत्वः, सप्तकृत्व इत्यादि।

सुँच्— द्विः, त्रिः, चतुः, सकृत्

धा— बहुधा

iii. तसिँवती —सुदामतः, हिमवत्तः, पीलुमूलतः। ब्राह्मणवत्, गुरुवत्, मित्रवत्, यद्वत्, तद्वत्, यथावत्। इत्यादि।

iv. ना-नाञौ — विना, नाना

संस्कृतसारः
छिद्यन्ते सर्वसंशयाः

कृदन्त-अव्ययीभाव-संज्ञकाव्ययानि

- सूत्रम्— कृन्मेजन्तः॥ (१,१.३९)
- सूत्रार्थः— कृद्यो मान्त एजन्तश्च तदन्तमव्ययं स्यात्।
- स्मारं स्मारम्। जीवसे (से)। पिबध्यै (शध्यै)॥
- सूत्रम्— क्त्वा-तोसुँन्कसुँनः॥ (१,१.४०)
- सूत्रार्थः— (क्त्वा-तोसुँन्-कसुँन् इत्येवमन्ताः शब्दाः अव्ययसंज्ञकाः स्युः।) एतदन्तमव्ययम्।
- कृत्वा। उदेतोः। विसृपः॥
- सूत्रम्— अव्ययीभावश्च॥ (१,१.४१)
- सूत्रार्थः— (अव्ययीभावसमासोऽव्ययसंज्ञकः स्यात्।)
- अधिहरि॥
- सूत्रम्— अव्ययादाप्सुँपः॥ (२,४.८२)
- सूत्रार्थः— अव्ययाद्विहितस्य आपः=टाप्-डाप्-चापः सुँपश्च= सुँ-औ-जसादीनां लुक् (स्यात्)।
- तत्र शालायाम्॥

➢ कृदन्तेषु चत्वारः प्रत्ययाः मान्ताः सन्ति। तद्यथा—

1. णमुँल् } अम् → स्मारं स्मारम्। इत्यादि।
2. कमुँल् } अम् → विभाजम्, अपलुपम्। वैदिकम्।
3. खमुँञ् } अम् → चोरङ्कारम् आक्रोशति। चोरं मत्वा।
4. तुमुँन् {तुम्} → पठितुम्, गन्तुम्, वक्तुम्। इत्यादि।

➢ कृदन्तेषु एजन्ताः (ए ओ ऐ औ-अन्ताः) प्रत्ययाः वैदिकास्सन्ति। तद्यथा— जीवसे। पिबध्यै॥ इत्यादि।

➢ कृदन्तेषु क्त्वा-तोसुँन्-कसुँन् इत्येवमन्ताः शब्दाः अव्ययसंज्ञकाः भवन्ति। उदाहरणं यथा—

1. क्त्वा {त्वा} → कृत्वा, पठित्वा, भूत्वा, गत्वा। इत्यादि।
2. तोसुँन् {तोस्} → उदेतोः= उदयं यावत्, प्रवदितोः। वैदिकम्।
3. कसुँन् {अस्} → विसृपः, आतृदः। वैदिकम्।

तत्र+ आ (शालायाम्।) (अत्र टाप्प्रत्ययस्य लुक्।)

संस्कृतसारः
छिद्यन्ते सर्वसंशयाः

लघुसिद्धान्तकौमुद्याम् (अव्ययानि)

अव्ययस्य परिभाषा

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

अन्वयः— यन्न व्येति तद् अव्ययम् त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु वचनेषु च सर्वेषु सदृशम् (अस्ति)।

व्याख्या— यत्= शब्दस्वरूपम्, न व्येति= विकारं न प्राप्नोति, तद् अव्ययं (नास्ति व्ययः= विकृतिः/विनाशो यस्य), त्रिषु लिङ्गेषु = स्त्रीपुन्नपुंसकेषु, सर्वासु च विभक्तिषु= कर्मकरणादिकारकेषु, वचनेषु च सर्वेषु= एकत्वद्वित्वबहुत्वेषु, सदृशं= एकप्रकारम् (अस्ति)।

उदाहरणम्— तत्र घटे (पुँल्लिङ्गे)
तत्र शालायाम् (स्त्रीलिङ्गे)
तत्र नगरे (नपुंसकलिङ्गे)

भागुरिमतम्

वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः।
आपं चैव हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा॥
वगाहः, अवगाहः। पिधानम्, अपिधानम्॥

अन्वयः— भागुरिः अव-अप्योः उपसर्गयोः अल्लोपं हलन्तानां आपं चैव वष्टि यथा— वाचा, निशा, दिशा। वगाहः, अवगाहः, पिधानम्, अपिधानम् (इत्यादिषु)॥

व्याख्या— भागुरिः= एतन्नाम्नो व्याकरणाचार्यः, अव-अप्योः उपसर्गयोः अल्लोपं= अकारस्य लोपं, वष्टि= इच्छति, यथा— वगाहः, अवगाहः, पिधानम्, अपिधानम् (इत्यादिषु), तथा हलन्तानां= हलन्तशब्दानाम् आपं= टाप्-प्रत्ययं चैव= पादपूर्त्यर्थक एवशब्दः, वष्टि= इच्छति, यथा— वाचा, निशा, दिशा (इत्यादिषु)॥

॥ इति अव्ययानि॥

अव्ययपरीक्षणम्

1. इदं अव्ययस्य लक्षणं नास्ति—

त्रिषु लिङ्गेषु सदृशम्

वचनेषु च सदृशम्

सर्वासु च विभक्तिषु च सदृशम्

यद्व्येति तदव्ययम्

2. अव्ययानां विभागः पाणिनिसूत्रदृष्ट्या कर्त्तुं शक्यते—

द्विधा

त्रिधा

चतुर्धा

पञ्चधा

3. 'समया' इत्यव्ययस्य पर्यायो नास्ति—

निकषा

समीपम्

आरात्

प्रकामम्

4. स्वरादीनां सञ्ज्ञा भवति ?

निपातसञ्ज्ञा

अव्ययसञ्ज्ञा

प्रगृह्यसञ्ज्ञा

कर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञा

5. 'ऋते' इत्यस्य पर्यायपदं नास्ति—

अन्तरा

अन्तरेण

विना

अद्धा

6. एतेषु कस्याव्ययस्य स्वरादिषु चादिषु चोभयत्र पाठो नास्ति—

स्वधा

माङ्

अथ

स्म

7. एतेषु कस्य अव्ययसञ्ज्ञा 'कृन्मेजन्त' सूत्रेण भवति—

है

हे

तुम्

पठितुम्

8. 'गत्वा' इत्यस्य अव्ययसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रमस्ति —

क्त्वातोसुँन्कसुनः

कृन्मेजन्तः

अव्ययीभावश्च

स्वरादिनिपातमव्ययम्

9. एतेषु कस्य समासस्य अव्ययसञ्ज्ञास्ति —

तत्पुरुषस्य

बहुव्रीहेः

द्वन्द्वस्य

अव्ययीभावस्य

10. अव्ययसञ्ज्ञायाः फलं वर्त्तते—

विभक्त्युत्पत्तिः

आपः सुपश्च लुक्

आपः सुपश्च लोपः

तत्र शालायामित्यत्र ङीप्प्रत्ययाभावः

11. 'वष्टि' इति पदस्य कोऽर्थः ?

वशं करोति।

इच्छति।

गच्छति।

मननं करोति।

12. भागुरिमते इदं न सम्भवति—

दिशा

वगाहः

वाच्

पिधानम्

13. सहार्थे अस्य अव्ययस्य प्रयोगो नास्ति—

साकम्

सार्धम्

शश्वत्

आतः

14. 'अथ' इत्यस्यायमर्थो नास्ति—

मङ्गलम्

आरम्भः

निरन्तरम्

कात्स्न्र्यम्

15. एतेषु विभक्तिप्रतिरूपकमव्ययमस्ति—

अस्तिक्षीरा

अवदत्तम्

सुदत्तम्

आ

16. सम्बोधनार्थे अस्याव्ययस्य प्रयोगो नास्ति—

उ, अ

है, पाट्

भो, अङ्ग

अस्ति, वषट्

17. 'यदि' अर्थे अस्याव्ययस्य प्रयोगो नास्ति—

चेत्

च(ण्)

यदि

नु

18. असङ्गतं कथनं चिनुत ?

स्वरादि-आकृतिगणोऽस्ति।

चादिरप्याकृतिगणः।

'नमस्'शब्दः अव्ययसञ्ज्ञकः तथा नपुंसके सकारान्तोऽप्यस्ति।

स्वरादीनामपि निपातसञ्ज्ञा वर्त्तते।

19. परिगणितेष्विदं नास्ति—

कृत्वोर्थाः

तसिँलादयः प्राक्पाशपः

ना-नाञौ

कृत्यप्रत्ययाः

20. प्राक्पाशपः तसिलादिषु इदं नास्ति—

तर्हि

अत्र

अद्य

यथावत्

21. 'अग्निसात्' इत्यस्य अव्ययत्वं केन—

शस्प्रभृतयः प्राक्समासान्तेभ्यः

तसिँलादयः प्राक्पाशपः

स्वरादिनिपातमव्ययम्

कृन्मेजन्तः

22. कस्य तद्धितान्तस्य अव्ययसञ्ज्ञास्ति ?

असर्वविभक्तिकस्य तद्धितान्तस्य

सर्वतद्धितान्तस्य

परिगणितस्य तद्धितान्तस्य

न कस्यापि

23. 'विजयतेतराम्' इत्यस्य केन अव्ययत्वम्—

आम्-प्रत्ययत्वेन

कृन्मेजन्त इति सूत्रेण

अव्ययीभावत्वेन

आकृतिगणत्वेन

24. एतेषु कस्य अव्ययसञ्ज्ञा नास्ति—

पठितुम्

पठित्वा

पाठं पाठम्

पठितव्यम्

25. एतेषु इदं वैदिकं नास्ति—

पश्च

कथा

उदेतोः

ऐषमः